गोनू झा के
मुस्कराते किस्से
विभा रानी

गोनू झा के मुस्कराते किस्से

विभा रानी

अरुणोदय प्रकाशन

गोनू झा की भैंस

मिथिला नरेश ने एक बार गोनू झा पर प्रसन्न होकर कुछ माँगने को कहा तो गोनू झा ने उनसे एक भैंस माँग ली ताकि घर में सभी दूध-दही का लाभ उठा सके। राजा ने उन्हें भैस दिलावा दी। गोनू झा भैंस की ख़ूब सेवा करते। अपने हाथों चारा खिलाते, उसकी खरखरी (बदन सहलाना) करते। राजा के यहाँ तो वह भैंस समूह में थी इस लिए सामूहिक तरीक़े से ही उसकी देखभाल होती थी; इसलिए वह देखने में सामान्य स्वास्थ्य की लगती थी। परन्तु जब वह गोनू झा के यहाँ पहुँची तब गोनू झा पूरे ध्यान से मन प्राण से उसकी सेवा करने लगे। उनके यत्नपूर्वक की गई देखभाल के कारण भैंस की देह निकल आई और वह बहुत ख़ूबसूरत दिखने लगी। सेहत अच्छी हो जाने के कारण दूध भी ख़ूब देने लगी। थोड़े ही दिनों गोनू झा के भैंस की धूम मच गई।

समाचार राजा के कानों में भी पड़ा, परन्तु दूसरे तरीक़े से हुआ यह कि गोनू झा से जलनेवाले लोगों ने अपने तरीके से ढेर सारी नमक-मिर्ची लगाकर राजा को कह सुनाया–''महाराज! गोनू झा आपसे जलते हैं। वे चाहते तो हैं आपका राज-पाट तक हथिया लेना। परन्तु आपके पुण्य-प्रताप से यह सम्भव नहीं। इसलिए वे आपको नीचा दिखाने का प्रयत्न कर रहे हैं।''

''वह कैसे? राजा ने पूछा।''

''महाराज! ज़रा उसकी भैंस देखिए। कितनी मोटी-ताज़ी करके रखा हुआ

है। उसके मुकाबले में तो महाराज की कोई भैंस नहीं ठहरती। गोनू झा तो प्रत्यक्ष रूप से आपका अपमान कर रहे हैं महाराज!"

राजा को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने गोनू झा की भैंस मरवा डालने का आदेश दे दिया। गोनू झा की भैंस मार डाली गई। उनसे जलनेवाले लोग बड़े प्रसन्न हुए, किन्तु गोनू झा बड़े दुःखी हुए। लेकिन राजाज्ञा के आगे कर ही क्या सकते थे। वे मन मसोसकर तो रह गए, पर मन ही मन प्रतिज्ञा की कि वे इसका बदला अवश्य लेंगे।

जब भैंस उठाने के लिए चर्मकार पहुँचे तब गोनू झा ने उन्हें अतिरिक्त पैसे देकर उसकी खाल ले ली। जब रात आधी हो गई और गोनू झा को इत्मीनान हो गया कि सभी सो गए हैं तो उठे और भैंस की खाल गाँव के बाहर एक पीपल के पेड़ पर रख दिया। अब वे रोज़ रात में उस पेड़ पर जाकर बैठ जाते।

एक रात वे उस पेड़ पर बैठे थे, तभी चोरों का एक झुंड वहाँ पहुँचा। वे सब चोरी करके लौटे थे। वे सब उसी पेड़ के नीचे बैठकर चुराए गए माल का बँटवारा करने लेगे। चोरों में एक चोर को रतौंधी (रात में दिखाई न देना) की बीमारी थी। उसने अन्य चोरों से कहा—"देखना! ठीक से बँटवारा करना। बेईमानी मत करना। बेईमानी करोगे तो भगवान तुम्हारे ऊपर ब्रज गिराएँगे।" लेकिन बावज़ूद इसके, चोर अपनी बेईमानी में लगे रहे। वे सोने के गहने व सिक्के आदि अपनी तरफ़ कर ले रहे थे तथा चाँदी व गिलट के गहने उसकी तरफ़ कर दे रहे थे। गोनू झा ऊपर से सब देख रहे थे। उन्होंने देखा कि यही सुनहरा मौक़ा है, बस, झट से भैंस की खाल नीचे गिरा दी।

इतने दिनों में खाल सूखकर इतनी कड़ी हो गई थी कि उस पर उंगली से चोट करो तो आवाज़ निकलती थी। सो पूरी की पूरी खाल जब ऊपर से गिरी तो बड़ी ज़ोर की खरपर की आवाज़ हुई। चोरों ने समझा कि बेईमानी करने के कारण सचमुच में ब्रज उनके ऊपर आ गिरा है। वे सब डर गए

वसुधा

है। उसके मुकाबले में तो महाराज की कोई भैंस नहीं ठहरती। गोनू झा तो प्रत्यक्ष रूप से आपका अपमान कर रहे हैं महाराज!''

राजा को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने गोनू झा की भैंस मरवा डालने का आदेश दे दिया। गोनू झा की भैंस मार डाली गई। उनसे जलनेवाले लोग बड़े प्रसन्न हुए, किन्तु गोनू झा बड़े दुःखी हुए। लेकिन राजाज्ञा के आगे कर ही क्या सकते थे। वे मन मसोसकर तो रह गए, पर मन ही मन प्रतिज्ञा की कि वे इसका बदला अवश्य लेंगे।

जब भैंस उठाने के लिए चर्मकार पहुँचे तब गोनू झा ने उन्हें अतिरिक्त पैसे देकर उसकी खाल ले ली। जब रात आधी हो गई और गोनू झा को इत्मीनान हो गया कि सभी सो गए हैं तो उठे और भैंस की खाल गाँव के बाहर एक पीपल के पेड़ पर रख दिया। अब वे रोज़ रात में उस पेड़ पर जाकर बैठ जाते।

एक रात वे उस पेड़ पर बैठे थे, तभी चोरों का एक झुंड वहाँ पहुँचा। वे सब चोरी करके लौटे थे। वे सब उसी पेड़ के नीचे बैठकर चुराए गए माल का बँटवारा करने लगे। चोरों में एक चोर को रतौंधी (रात में दिखाई न देना) की बीमारी थी। उसने अन्य चोरों से कहा—''देखना! ठीक से बँटवारा करना। बेईमानी मत करना। बेईमानी करोगे तो भगवान तुम्हारे ऊपर ब्रज गिराएँगे।''
लेकिन बावज़ूद इसके, चोर अपनी बेईमानी में लगे रहे। वे सोने के गहने व सिक्के आदि अपनी तरफ़ कर ले रहे थे तथा चाँदी व गिलट के गहने उसकी तरफ़ कर दे रहे थे। गोनू झा ऊपर से सब देख रहे थे। उन्होंने देखा कि यही सुनहरा मौक़ा है, बस, झट से भैंस की खाल नीचे गिरा दी।

इतने दिनों में खाल सूखकर इतनी कड़ी हो गई थी कि उस पर उंगली से चोट करो तो आवाज़ निकलती थी। सो पूरी की पूरी खाल जब ऊपर से गिरी तो बड़ी ज़ोर की खरपर की आवाज़ हुई। चोरों ने समझा कि बेईमानी करने के कारण सचमुच में ब्रज उनके ऊपर आ गिरा है। वे सब डर गए

और प्राण लेकर भागे। सारी चीज़ें नीचे यूँ ही बिखरी पड़ी रहीं। गोनू झा ने नीचे उतरकर सब कुछ समेटा और घर की ओर चल पड़े।

घर पहुँचकर उन्होंने पड़ोस से तराजू मँगवाई। पड़ोसिन को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतनी रात में ऐसी कौन सी चीज़ आ गई गोनू झा के जिसे तोलने के लिए उन्होंने तराजू मँगाया है। उसने तराजू के नीचे थोड़ा सा गीला आटा चिपका दिया।

गोनू झा ने तराजू में चिपकाए गए आटे को देख लिया। उन्होंने जानबूझकर उसमें एक अशर्फी चिपका दी, अशर्फी देखकर पड़ोसन हल्का-बक्का रह गई। उसने अपने पति से यह बात बताई। बिजली की गति से यह बात गाँव में फैल गई कि गोनू झा को इतने रुपए मिले हैं कि जिसको गिनने की नहीं, तोलने की ज़रूरत आ पहुँची।

एक-एक कर गाँव के सभी लोग गोनू झा के यहाँ पहुँचने लगे। सब यह जानने को उत्सुक और बेचैन थे कि गोनू झा के पास इतना धन आया कहाँ से? गोनू झा ने सबसे अलग-अलग कहा कि इस भैंस ने मेरी तक़दीर खोल दी। यही गाँव के बाहर जो पीपल का पेड़ है, उस पर एक भूत रहता है। उसे भैंस की खाल बहुत पसन्द है। वह एक भैंस की खाल पर एक लाख रुपए देता है। मेरे पास तो दुर्भाग्य से एक ही भैंस की खाल थी। इसलिए महज एक लाख रुपए मिले। लेकिन मैंने उससे वादा किया है कि कल मैं उसे एक सौ भैंसों की खाल लाकर दूँगा। तब सोचिए, मेरे पास कितने पैसे हो जाएँगे। लेकिन, सुनो, यह बात किसी से कहना नहीं, वरना कल खोजने पर भी मुझे भैंस नहीं मिलेगी और भैंस न मिली तो खाल नहीं मिल पाएगी और खाल नहीं मिलने से भूत पैसे भी नहीं देगा।

सभी यह बात सुनकर सुनकर चुप्पी लगा जाते। किन्तु गोनू झा झा ख़ुद ही सबको एक एक करके बता भी रहे थे और सभी को ताकीद भी कर देते थें कि वह यह राज किसी के आगे ज़ाहिर न करे। चुपके-चुपके ही यह बात

चारों ओर फैल गई। दूसरे दिन सुबह होते-होते हज़ारों भैंसों की जान चली गई। जिनके पास भैंस नहीं थी, वे चारों ओर भैंस के लिए मारे-मारे फिरने लगे। मगर कौन अभागा होगा जो कुछ रुपयों में भैंस बेचकर भूत से मिलनेवाले लाख रुपए छोड़ देता। सुबह नौ-दस बजते-बजते सारी भैंसों का सफ़ाया हो गया। यहाँ तक कि राजा की भैंसों को भी चुराकर मार डाला गया।

रात में भैंस की खाल लेकर सभी गाँव के बाहर के पीपल के पेड़ के पास पहुँच गए। कुछ पेड़ पर बैठ गए, कुछ पेड़ के नीचे। बाक़ी इधर-उधर, जिधर जगह मिली, बैठ गए।

सारी रात वे सभी पीपल का पेड़ अगोरे बैठे रहे, मगर कहीं कुछ भी हासिल न हुआ। अलबत्ता सभी के भैंसों की जान ज़रूर चली गई। सुबह सभी छाती पीटते, माथा धुनते, हाय-हाय करते लौट आए।

सभी क्रोध से भरे हुए थे। सभी ने सोचा कि गोनू झा ने हम सभी को ख़ूब छकाया। वे सब राजा के पास फरियाद लेकर पहुँचे। राजा को भी यह सुनकर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने तुरन्त गोनू झा को हाज़िर होने को आदेश दिया।

गोनू झा आए। राजा ने पूछा—"यह कैसी शैतानी है, गोनू झा? पूरा का पूरा गाँव भैंस विहीन हो गया। अब गाँव के बाल-बच्चे दूध-दही कैसे खाएँगे-पिएँगे। इन सभी भैंसों की हत्याओं के आप ज़िम्मेदार हैं उसकी सज़ा

तो मिलेगी ही निरपराध भैसों की हत्या का पाप भी आपको लगेगा।"

गोनू झा ने विनम्र स्वर में कहा—"महाराज! आप राजा हैं, आप आदेश, सज़ा जो भी देंगे, मुझे स्वीकार होगा। परन्तु मुझे यह बताया जाए कि क्या मैंने किसी से कहा था कि वह अपनी भैंस मार डालें?

"तो फिर यह हुआ कैसे? आपने ही तो सभी को लोभ दिलाया।" राजा ने गुस्से से तमतमाते हुए कहा।

गोनू झा ने हँसते हुए उत्तर दिया—"महाराज! मुझे क्या पता था कि ये सभी इतने बेवकूफ़ हैं। सोचिए ज़रा, कहीं भूत-प्रेत होते हैं और भूत-प्रेत पैसे देते हैं! महाराज! यह भी सोचिए कि जब मेरी भैंस मारी गई तब क्या किसी ने अफसोस ज़ाहिर किया! सब उल्टा ख़ुशी मना रहे थे। मेरी भूतवाली बात पर सभी ऐसे बेहाल हो गए, जैसे कहीं रुपयों की बारिश हो रही है। और मुझे तो लगता है कि यदि कोई भूत रहा भी होगा तो इतनी भीड़ देखकर वह भी जान लेकर भाग खड़ा हुआ होगा।

गोनू झा की बात सुनकर राजा को भी हँसी आ गई। गाँववालों के आगे सिवाय हाथ मलने के और कोई उपाय ही नहीं था। वे सब पछताते विदा हो लिए। और गोनू झा! वे सदा की तरह मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए तम्बाकू मलते रहे।

गोनू झा की बिल्ली

एक बार की बात हैं। मिथिला नरेश ने सभी दरबारियों को एक-एक बिल्ली पालने के लिए दी और निर्देश दिया कि इसकी ख़ूब अच्छी तरह से देखभाल

की जाए। इसे भरभूर दूध पिलाया जाए, ख़ूब खिलाया जाए। दो माह बाद मैं सभी की बिल्लियाँ देखूँगा। जिसकी भी बिल्ली कमज़ोर नज़र आएगी, उससे इसके बारे में कैफियत तलब की जाएगी और दंड भी दिया जाएगा।

सभी दरबारी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। बिल्ली के लिए दूध? जितना दूध उन लोगों के घर में आता था, बच्चों को ही पूरा न पड़ता था। इस बिल्ली के लिए दूध कहाँ से आएगा? सब चिंतित, परन्तु चुप थे।

गोनू झा भी वहीं थे। उन्होंने कहा—“महाराज, आप चिन्ता न करें। हम बिल्ली की देखभाल उस गौ माता से भी बढ़कर करेंगे जो इस बिल्ली को दूध पिलाने के लिए आपके सौजन्य से हमारे घर आएगी। हम सारा का सारा दूध बिल्ली रानी की सेवा में अर्पित कर देंगे। गाय का क्या है? वह तो घास खाएगी, पड़ी रहेगी। परन्तु बिल्ली तो नौलखे हार की तरह क़ीमती है।

गोनू झा ने इशारों-इशारों में ही अपनी माँग राजा के सामने रख दी थी। राजा समझ गए। सभी दरबारियों को एक-एक गाय दे दी गई।

अब सारे दरबारी जी-जान से बिल्ली की सेवा में जुट गए। वे स्वयं दूध दुहते और बिल्ली को पिलाते। सबके मन में यह बात थी कि जिसकी बिल्ली

जितनी अधिक हष्ट-पुष्ट रहेगी, राजा की कृपा दृष्टि उतनी ही अधिक उन पर पड़ेगी।

इधर गोनू झा गाय पाकर बड़े प्रसन्न थे। पत्नी से गाय लाने का वादा कर चुके थे। इसलिए बेखौफ़ घर पहुँचे गाय की रस्सी थामे हुए। पत्नी ने दरवाज़ा खोला तो गाय उसके आगे कर दी। पत्नी ने गाय की आरती उतारी, पैसे लुटाए। गोनू झा ने कहा—"अब तो तुम्हारी साध पूरी हुई न! अब जी भरकर दूध पियो, दही खाओ।"

"परन्तु यह बिल्ली?" साथ में बिल्ली देखकर पत्नी ने पूछा।

"अरे भाग्यवान"! बिल्ली नहीं, लक्ष्मी बोल! इसी के बलबूते तो यह गाय मिली।" कहते हुए गोनू झा ने सारा किस्सा कह सुनाया और उसके बाद की अपनी योजना पर अमल करने को तत्पर हो गए।

दूध दुहा गया। उबाला गया। गोनू झा ने खौलता दूध एक बड़े कटोरे

में मँगवाया। फिर बिल्ली बुलवाई।

बिल्ली कों दूर से ही दूध की गन्ध लग़ गई थी। वह भागती हुई आई। ज्यों ही वह कटोरे के पास पहुँची, गोनू झा ने उसे पकड़ लिया और उसका सर पकड़कर मुँह गरम दूध में डाल दिया। बिल्ली का मुँह जल गया। वह म्याऊँ-म्याऊँ करती भाग खड़ी हुई।

दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवे दिन भी गोनू झा ने फिर वही किया। फिर से खौलता दूध मंगवाया और बिल्ली का मुँह उसमें डाल दिया।

छठे दिन भी वैसे ही दूध मँगवाकर रखा गया। बिल्ली भी बुलाई गई। परन्तु यह क्या! ज्यों ही उसने दूध का कटोरा देखा। उल्ले पाँव वह भाग खड़ी हुई। अब गोनू झा सपरिवार दूध का उपभोग करने लगे। बिल्ली के आगे रूखा-सूखा डाल देते। हाँ, बीच-बीच में वे वही गरम दूध वाला धन्ध ा दुहराना न भूलते। परन्तु बिल्ली भी अब समझ चुकी थी। दूध का कटोरा देखते ही भाग लेती।

दो महीने बाद राजा ने सबको बिल्ली सहित बुलवाया। सबकी बिल्लियाँ तन्दुरुस्त थीं। सब एक-दूसरे को बढ़-चढ़कर बता रहे थे कि वे किस तरह से अपनी बिल्ली की देखभाल करते हैं। सबको उम्मीद थी कि उनकी बिल्ली को देखकर राजा प्रसन्न होंगे और पुरस्कार के रूप में धन, ज़मीन आदि देंगे।

गोनू झा भी अपनी बिल्ली के साथ आए थे। दुबली-पतली मरियल सी बिल्ली देखकर सभी हैरत में पड़ गए। उनसे जलनेवाले दरबारी तो मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए कि अब तो गोनू झा दंड से बच नहीं सकते।

राजा ने सभी की बिल्लियाँ देखीं। गोनू झा की भी। वे भी उस बिल्ली की अवस्था देखकर हैरत में पड़ गए। राजा ने गोनू झा से पूछा—''क्यों महाशय, आपकी बिल्ली इतनी कमज़ोर क्यों है? क्या इसे दूध नहीं पिलाते?''

''महाराज!'' गोनू झा ने बड़े विनम्र स्वर में कहा—''यह बिल्ली तो दूध की ऐसी दुश्मन है कि पूछिए मत, मुँह ही नहीं लगाती दूध को।''

राजा को बड़ा विस्मय हुआ। बिल्ली और दूध से परहेज़?

गोनू झा ने फिर कहा–"अगर महाराज को मेरे कथन पर सन्देह हो रहा तो स्वयं देख लें। आप एक कटोरा दूध मँगवाएँ फिर देखें कि यह क्या करती है।"

दूध मँगवाया गया। बिल्ली गोनू झा की गोद में थी। जैसे ही उसने दूध देखा, वह गोनू झा की गोद से छूटने के लिए बेताब हो उठी और जैसे ही गोनू झा ने उसे छोड़ा, वह दूध की उल्टी दिशा में भाग खड़ी हुई। दूध की तरफ़ उसने आँख उठाकर भी न देखा।

राजा गोनू झा की चतुराई समझ गए। वे मुस्करा उठे। गोनू झा भी मन्द मन्द मुस्कुराते रहे। राजा ने ढेर सारे उपहारों के साथ गोनू झा को विदा किया। अन्य दरबारी यही नहीं समझ पाए कि बिल्ली की ऐसी दुर्दशा करनेवाले गोनू झा को राजा ने क्यों इतने उपहार दिए और उन लोगों को उन्होंने पूछा तक नहीं।

गोनू झा का बैल

गोनू झा के पास काफी खेत था। उस पर वे अपनी देखरेख में हल जुतवाते, खेती कराते, हल चलाने के लिए उनके पास एक जोड़ी पछाँही बैल थे–ख़ूब सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट, उन्होंने एक बैलगाड़ी भी रखी हुई थी जिसे वे दोनों बैल ही चलाते थे। गोनू झा दोनों बैलों को बहुत प्यार करते थे। उनको नहलाने-धुलाने से लेकर उनके चारा तथा रहने की जगह का स्वयं मुआयना करते थे।

संयोग की बात कि इन दोनों बैलों में से एक बैल बीमार पड़ा। गोनू झा

ने काफी दवा, इलाज किया। किन्तु वे उस बैल को बचा न सके, बैलों से गोनू झा को विशेष लगाव था, इसलिए कई दिनों तक उसका विछोह उन्हें टीसता रहा। परन्तु कब तक? आखिर खेत जोतने के लिए बैल तो चाहिए ही। लिहाजा एकदिन वे पशुहाट में पहुँचे और काफी देखभाल कर एक बैल ख़रीद लिया।

यह बैल पहलेवाले बैल की तरह ही सुन्दर, ऊँचा और मज़बूत था। गोनू झा को लगा कि उनकी जोड़ी अच्छी जमेगी।

बैल लेकर गोनू झा गाँव की ओर चले। रास्ते में उन्हें एक आदमी मिला। गोनू झा के हाथ में बैल की रस्सी देखकर उसने पूछा—"गोनू ब्राबू! बैल ख़रीदा क्या? गोनू झा ने हाँ में जवाब दिया। उसने फिर पूछा—"कितने में ख़रीदा?" गोनू झा बोले—"मत पूछो भाई। बड़ा मँहगा है। पूरे 25 रुपए लग गए इसको ख़रीदने में।" आदमी बोला—"तो क्या हुआ गोनू बाबू! रुपया लग गया तो लग गया, बैल तो अच्छा मिला न!" "हाँ यह तो है!" कहकर गोनू झा आगे बढ़ गए।

कुछ दूर जाने पर फिर एक व्यक्ति मिला उसने भी वही सब पूछा। गोनू

झा झा ने भी वही सब जवाब दिया। फिर तो घर तक पहुँचते-पहुँचते इतने सारे लोग मिले और इतनी बार उन्हें वह सब कुछ कहना पड़ा कि वे तंग आ गए।

दूसरे दिन जब वे हल में जोतने के लिए बैल को खोल रहे थे, तब भी उधर से कोई एक गुज़रा और उसने भी वही सवाल किया। गोनू झा को फिर जवाब देना पड़ा, मगर इसके बाद वे इतना भन्नाए, इतना भन्नाए कि बस! उन्होंने बैल की रस्सी खोली और उसे दौड़ाते हुए ले गए। और अरहर के एक खेत में घुसा दिया। स्वयं वे एक पेड़ पर चढ़ गए और शोर मचाने लगे—''दौड़ो, दौड़ो गाँववालों, बाघ है बाघ!''

गोनू झा का चिल्लाना सुनकर पूरे गाँववासी वहाँ जुट गए। उन सबने इधर-उधर देखा मगर बाघ का कहीं कोई अता-पता तक न था। गाँववालों ने आश्चर्य से पूछा—गोनू बाबू, बाघ-बाघ चिल्ला रहे हैं मगर कहाँ है बाघ!'' गोनू झा ने अपने बैल की तरफ़ इशारा कर दिया। गाँववाले फिर हैरान हो गए। वे बोले—परन्तु गोनू झा यह बाघ कहाँ है? यह तो आपका बैल है जिसे आप कल ख़रीदकर लाए थे।''

''जी! यह मेरा बैल ही है जिसे कल मैं पूरे पचीस रुपए देकर ख़रीदकर लाया हूँ। सुना आप लोगों ने? यह मेरा बैल .है जिसे कल मैं पचीस रुपए में खरीदकर लाया हूँ।'' ऐसा उन्होंने तीन-चार बार कहा।

लोगों ने समझा कि गोनू झा पागल हो गए हैं। लेकिन गोनू झा ने कहा—''कल से, जबसे मैंने बैल ख़रीदा तब से पचास लोग इसके बारे में पूछ चुके। मैं उत्तर देते-देते थक गया, इसलिए मैंने सोचा कि पूरे गाँव को ही बता दूँ कि बैल मैंने कितने में ख़रीदा है। कब ख़रीदा है!''

''मगर जब आपको घोषणा ही करनी थी तो बाघ-बाघ क्यों चिल्लाए?

''इसलिए कि बैल का नाम सुनकर कोई थोड़े ही अपने घर से निकलता! बाघ के नाम से तो सभी यहाँ आ गए।''

गोनू झा की बातें सुनकर सभी हँस पड़े। गोनू झा भी पेड़ से उतरकर तम्बाकू मलने लगे।

गोनू झा और हज्जाम

मिथिला के लोग मिथिला शब्द के शुरूआती अक्षर यानी "म" से आरम्भ होनेवाली तीन खाद्य पदार्थों पर जान छिड़कते हैं। ये हैं—मछली, मडुआ और मखाना। मछली तो यहाँ के लोगों के लिए शुभ का प्रतीक है। यात्रा पर या किसी शुभ काम के लिए निकलते वक़्त मछली देखकर या खाकर निकलना यहाँ के निवासियों के दैनिक जीवन का एक चरित्र है। गोनू झा भी इसके अपवाद न थे।

एक दिन गोनू झा हाट गए वहाँ ज़रूरत की जो थोड़ी बहुत ख़रीदारी करनी थी, की फिर वहाँ से मछली बाज़ार की तरफ़ मुड़े। हाट में आदमी जाए और मछली न ले, गोनू झा इसे कैसे बर्दाश्त कर जाते!

मछली बाज़ार में एक से एक मछलियाँ थी—मांगुर, गिरई, झीगा, रोहू, उन्हें एक

डेढ़ हाथ बड़ी रोहू मंछली पसन्द आ गई। मोल-तोल करके उसे ख़रीदा और उसके मुँह में रस्सी फँसाकर मछली को लटकाया और हाथ में लेकर घर की ओर चल पड़े।

हाट के गाँव के रस्ते में नाना तरह की योजनाएँ उनके मन में मछली को लेकर बनने लगी। फिर को दाल में डालकर बनाया जाएगी, पेटीवाले आधे हिस्से को तलकर और आधे में झोर (शाखा) लगाकर तैयार करवाऊँगा, सुनी मछली चूरा के भूँजे के साथ कितनी स्वादिष्ट लगती है और सरसों के मसाले में आम की खटाई डालकर पकाई गई झालदार मछली और गरम-गरम भात-गोनू झा बच्चों की तरह किलक उठे।

गोनू झा के गाँव में एक हज्जाम (नाई) रहता था। वह बहुत ही धूर्त और फन्देबाज था। लोगों को ठग लेना या बेवकूफ बना लेना उसके बाएँ हाथ का खेल था। उसने जब देखा कि गोनू झा डेढ़ हाथ की लम्बी मछली टांगे लिए चले जा रहे हैं तो उसके भी मुँह में पानी भर आया वह सोचने लगा कि इस मछली को कैसे हासिल किया जाए। कोई और आदमी होता तो वह कुछ भी कह-सुन उससे मछली झटक लेता। मगर वहाँ तो ख़ुद ही गोनू झा थे। और उनसे मछली झटक लेना इतना आसान थोड़े ही था।

मगर हजाम भी सौ धूर्तों का एक धूर्त था। उसने मन ही मन ख़ुद को ही चुनौती दी और कहा—''यदि आज इस मछली को गोनू झा से नहीं हथियाया तो मैं भी अपने बाप का बेटा नहीं।'' उसने मन ही मन कुछ तय किया और गोनू झा की तरफ़ चल पड़ा।

जैसे ही वह गोनू झा के सामने आया, उसने गोनू झा को नमस्कार किया और कहा—''हाट से आ रहे हैं क्या गोनू बाबू, आप उधर हाट गए और इधर जुलुम हो गया।''

गोनू झा मन ही मन आशंकित हो उठे। वे पूछने लगे—'':क्यों? घर पर सब राजी-कुशल तो है न! दो-तीन घंटे में ऐसा कौन सा अनर्थ हो गया?''

''एह गोनू बाबू, मत पूछिए, इधर आप हाट की ओर रवाना हुए और उधर आपकी माँ...'' और इतना कहकर वह लगा फूट-फूटकर रोने।

गोनू झा तो जैसे काठ हो गए। माँ चल बसी! ऐ! अभी तो भोर में जब मैं हाट के लिए निकला था तब वे भात पकाने के लिए चावल चुन रही थीं। अचानक क्या हो गया जो वह इस तरह सिधार गई!'' गोनू झा अपनी माँ को बहुत चाहते थे। इसलिए जब हजाम ने उन्हें यह ख़बर सुनाई तो वह स्तब्ध रह गए। पहले उन्हें लगा कि कहीं यह हजमा झूठ तो नहीं बोल रहा। फिर लगा कि किसी के मरने-वरने की बात कोई ये ही क्यों करेगा! ख़ैर! अब तो छूतक पड़ गया। इसमें मछली तो खाई नहीं जा सकती। उन्होंने रोते हुए हजाम को चुप कराया और मछली उसे देते हुए कहा–''ले रे! ई मछली का भोग तुम्हीं को लिखा था। हमारे जैसा कौनो होगा अभागा जो एक तो माँ गई दूसरे ई माछ।'' ऐसा कहकर वे सोक मनाते हुए घर की ओर चल पड़े।

हजाम तो इतना ख़ुश हुआ, इतना ख़ुश कि उसे लगा, जैसे उसे मछली नहीं, कुबेर का खजाना मिल गया। दरअसल उसे मछली मिलने की ख़ुशी जितनी नहीं थी, उससे ज़्यादा आनन्द की बात इसलिए थी कि उसने गोनू झा जैसे व्यक्ति को बेवकूफ़ बना दिया। और यह उसकी नज़र में राजा से इनाम पाने से भी ज़्यादा बढ़कर था। वह ख़ुश-ख़ुश घर गया और पत्नी से बोला–''ये लो माछ और ऐसा मज़ेदार झोरवाला बनाओ कि बस, खाकर मन तृप्त हो जाए क्योंकि यह मछली अगर स्वादिष्ट न बनी तो इस मछली का कोनो मोजर नहीं।''

''क्यों, ऐसा कौन सुरखाब का पर लगा है इस मछली में पत्नी ने पूछा।

''अरे मत पूछो। मछली तो मेरे लिए एक बरात में मिले नेग और बिदाई से ज़्यादे महत्त्व की है।'' कहते हुए हजाम ने उसे सारी बातें बता दीं।

इधर सोक-मनाते गोनू झा घर पहुँचे तो घर पर सब सामान्य पाया। माँ

आँगन में बैठी गेहूँ धूप में पसार रही थी। गोनू झा की जान में जान तो आई ही; उन्हें हजाम की कहीं बातों पर हैरानी भी हुई। वे बोल ही पड़े—"माँ, तुम अच्छी तो हो?"

माँ को बड़ी हैरानी हुई —"क्यों, मुझे क्या हुआ है? मैं तो भली चंगी हूँ। तुम कहो, तुम तो हाट गए थे न माछ लाने, यहाँ भात पकाकर और मसाला पीस कर रखा हुआ है कि माछ लेकर आओगे तब तो मछ पकेगा। कहाँ है माछ?

गोनू झा उलझन में पड़ गए माँ की बातों को तो टाल दिया और अन्दर कमरे में आकर लेट गए। उन्हें चैन नहीं आ रहा था वे समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर हजाम ने ऐसा किया तो क्यों किया? अब वे हजाम की उस समय की भाव-भंगिमा के बारे में याद करने लगे। जिस समय वह उनसे बात कर रहा था। अब गोनू झा ने लक्ष्य किया कि अधिकांश समय हजाम की नज़र गोनू झा के हाथ में लटक रही मछली पर भी गड़ा रही थी। वे एकदम से सब कुछ समझ गए।

"अच्छा! तो इस हजाम ने हमी को उल्लू बनाया है। अच्छी बात है! हजमा रे, ते भी क्या याद रखेगा किससे पाला पड़ा है। ठहर जा!" गोनू झा ने मन ही मन सोचा।

गोनू झा ने शिकायत की कि उनके मलद्वार के निकट एक फोड़ा निकल आया है इधर वे आठ दिनों तक लगातार खाते रहे, मगर शौच के लिए एक बार भी नहीं गए। फोड़ा निकालने की बात पर हजाम को बुलाया गया क्योंकि तब शल्य चिकित्सक होते कहाँ थे? वैद्य दवाइयाँ देते थे और चीर-फाड़ का काम नाई करते थे।

गोनू झा ने घर से दूर एक फूस का छोटा सा कमरा बनवाया था। और वहीं चौकी पर लेट गए। चौकी को कमर के नीचे वाले स्थान से बड़ी सी गोलाई में काट दिया गया था, ताकि हजाम नीचे झुककर अपना काम कर सके।

हजाम आया। गोनू झा बड़े प्रेम से उससे मिले। बातें की। उसकी कुशलता, काम कमाई-धमाई का हाल-चाल पूछा। हजाम पहले तो डरा हुआ था, मगर गोनू झा को इस तरह सामान्य ढंग से बातें करते देख आश्वस्त हुआ।

वह अपना साजो-सामान लेकर नीचे झुका यह देखने कि फोड़ा कहाँ है और कितना बड़ा है। जैसे ही वह झुका, गोनू झा ने आठ दिनों से पेट में जमाकर रखा हुआ सारा मल उसके ऊपर निकालना शुरु कर दिया। कमरा बेहद तीख़ी और दम घोंट देनेवाली दुर्गन्ध से भर गया। और हजाम की हालत तो आप सोच सकते हैं। इधर गोनू झा का कहना जारी रहा—ले बेटा हजमा! मछली ले गया था न! उस दिन मछली खाई तो आज यह परस्वाद भी लेता जा।

गोनू झा ने सारा इन्तजाम करके रखा हुआ था। वे उठे हजाम को भी उठाया गया पानी व दूसरे कपड़े रखे हुए थे। हजाम को नहला-धुलाकर दूसरे वस्त्र दिए गए। जब उसने नहा-धोकर कपड़े-वपड़े पहन लिए, तब गोनू झा ने तलहथी में मलते खैनी की एक चुटकी उसकी ओर बढ़ा दी और कहा कि ले बेटा, जाते-जाते ई चैतन्यचूर्ण लेता जा ताकि याद रहे कि किसी को इस तरह धोखा न दो। इस तरह के झूठ से किसी की जान भी जा सकती है। आज का यह सबक तुम्हारे लिए काफी है।'' कहते हुए गोनू झा ने बची हुई तम्बाकू होठों में दबाई और मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए घर की ओर चल पड़े।

गोनू झा और महाजन

अपने आरम्भिक दिनों में गोनू झा बहुत ग़रीब थे। पैसे-पैसे को मुहताज जिन्दगी तो रुखा-सूखा खाकर किसी तरह कट जाती, परन्तु जब कोई विशेष कार्य

सामने आ जाता तो पैसे के अभाव में उसे पूरा करना विकट समस्या होती; तब इधर-उधर से माँगकर कर्ज़, उधार लेकर वे काम चलाते।

ऐसे ही एक बार उनके यहाँ कोई विशेष काम आ पड़ा जिसे सम्पन्न करने के लिए गोनू झा ने अपने गाँव के महाजन से 200/- रु. कर्ज़ लिए तब के ज़माने में दो सौ रुपए भी बहुत बड़ी चीज़ होती थी। कर्ज़ लेकर गोनू झा ने अपना काम तो चला लिया, परन्तु महाजन का वह कर्जा सधाते कैसे? आमदनी का कोई दूसरा रास्ता नहीं था और दैनिक आवश्यक ख़र्च कम करने का भी कोई उपाय न था।

महाजन वैसा ही था जैसा आमतौर पर अन्य महाजन होते हैं—परम लालची क्रूर और दुष्ट, उसकी यही एक मान्यता थी "कि घोड़ा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या? मैं अगर लोगों को कर्ज़ा देकर भूल जाऊँ या उस पर सूद न लूँ तो मेरा धन्धा चलेगा या उसका भट्ठा बैठ जाएगा। आखिर उसके पैसे गाँववाले के ही काम

आते हैं। उसके पास पैसे न हुए तो गाँववालों का काम कैसे चलेगा?''

महाजन भयंकर सूदखोर भी था। मूल पर कड़ा ब्याज लेता था। गोनू झा पर भी उसने अपने सूद का वही पुराना दर थोपा। नतीजन छह-सात महीने में ही उसका मूल और ब्याज मिलकर एक हज़ार रुपए हो गया। अब वह गोनू झा से रात-दिन तगादा करने लगा—''मेरे पैसे वापस कीजिए।''

गोनू झा ने गिड़गिड़ाकर कहा—''महाजन, इतने रुपए मैं कहाँ से लाऊँगा। आप कुछ सूद छोड़ दीजिए। ''अरे वाह! सूद छोड़ दूँ। जब तुम लोग जजमानी करने जाते हो, तब क्या कहते हो कि इतनी दान-दक्षिणा क्यों देते है? कुछ कम कर दिया जाए। सो तो लोग अगर पूरा महल अटारी दे दें दान में तो तुम लोगों को तो वह भी कम पड़ेगा। और मेरे पैसे जब तुम पर बन रहे हैं तब कह रहे हो कि कम कर दूँ?''

गोनू झा गिड़गिड़ाते रहे और महाजन अपनी धौंस दिखाकर चला गया। गोनू झा हताश और परेशान वहीं बैठे रह गए।

संयोग से महाजन के बेटे की शादी पड़ी। अब तो वह अपने पैसे के लिए गोनू झा को और भी तंग करने लगा। उसने गोनू झा को अपने यहाँ बुलवाया और कहा—''देखिए, मेरे बेटे की शादी है। शादी-ब्याह के घर में कितना ख़र्चा पड़ता है, आपको मालूम है। इसलिए अब आप मेरे पैसे वापस कर दीजिए।

गोनू झा व्यंग्य-विनोदी तो थे ही, मुस्कुराते हुए कहा—''मालिक! ख़र्चा तो बेटी के ब्याह में होता है। बेटा तो सोलह दाँतवाला बैल होता है। उसकी शादी में ख़र्चा कैसा!''

उनकी बात सुन महाजन बिगड़ पड़ा। उसने कहा—''मैंने आपको अपने पैसे लौटाने के लिए बुलाया है, आपसे उपदेश सुनने के लिए नहीं। मैं आपको एक महीने घा समय देता हूँ। इस अवधि में आप मेरे पैसे चुका दें, वरना मुझसे बुरा और कोई न होगा।''

बेचारे गोनू झा क्या करते? उदास घर लौट आए। एक महीने में दिन

ही कितने होते हैं! देखते ही देखते बीत गए। गोनू झा न तो रुपए की व्यवस्था कर सके, न ही महाजन का कर्ज़ा उतार सके।

महीना पूरा होने के अगले दिन गोनू झा अपने खेत में काम कर रहे थे। महाजन ने इस बार उन्हें अपने यहाँ नहीं बुलवाया; बल्कि ख़ुद ही उनके पास पहुँच गया और आँखें लाल-पीली करते हुए बोलने लगा—"तुम बहुत बड़े बेईमान हो। तुम्हारे जैसा दगाबाज़ मैंने आज तक नहीं देखा। एह! रुपए लेने के समय कैसे तलुए सहला रहे थे। और अब देने के वक़्त कमर टूट रही है। मेरे पैसे हड़प कर जाना चाहते हो? मैं भी आज तय करके आया हूँ कि बिना पैसे लिए मैं यहाँ से हिलूँगा नहीं।"

महाजन की बात सुनकर गोनू झा ने कुछ भी नहीं कहा। बस, अपने खेत में ही लगे एक पेड़ पर चढ़ गए। महाजन ने सोचा कि यह मुझे धोखा देकर यहाँ से भागना चाहता है। इसलिए वह पेड़ की जड़ के पास बैठ गया और बिगड़ने लगा—"पेड़ पर छुप जाने से क्या होगा? कब तक पेड़ पर चढ़े रहोगे? आज तो मैं जब तक रुपए नहीं ले लूँगा, यह पेड़ छोड़कर नहीं जाऊँगा।"

पेड़ पर चढ़े-चढ़े गोनू झा ने कन्धे पर से अपना गमछा निकाला और पेड़

की डाल से उसे बाँध दिया फिर बोले—"देखिए महाजन, मैं आपकी वजह से फाँसी लगाकर मर रहा हूँ!"

"फाँसी?" गोनू झा की बात सुनकर महाजन चौंका ऊपर देखा तो सचमुच गोनू झा ने गमछे से गले का फन्दा बना रखा था। अब तो महाजन डर के मारे काँपने लगा। उसने सोचा कि यदि सचमुच यह मर गया तो सबसे बड़ी बात तो यह कि ब्रह्म हत्या का पाप लगेगा। फिर गाँववाले इस पाप के कारण मेरा हुक्का-पानी बन्द कर देंगे। गोनू झा निर्धन ज़रूर हैं, मगर अपनी बुद्धिमानी के कारण दूर-दूर तक जाने जाते हैं। इसलिए इनकी मृत्यु की बात छुपी तो रहेगी नहीं। और उनकी मृत्यु का कारण मैं हूँ। यह जानकर तो लोग मेरी एक भी दशा बाक़ी न रखेंगे। इतनी बड़ी बात राजा से कैसे छुपी रह सकती है। वे तो जीते जी ही मेरी खाल खींचकर उसमें भुस भरवा देंगे। ऐसा सोचकर वह झट से बोला—" नहीं, नहीं। ऐसा मत कीजिए गोनू झा। मुझे यहाँ से जाने दीजिए, फिर आपकी जो मर्ज़ी हो, वह कीजिए।" कहते हुए महाजन वहाँ से जाने लगा।

परन्तु गोनू झा ने कहा—"ऐसे कैसे चले जाइएगा। आप भाग नहीं सकते। भागेंगे तो मैं चिल्लाऊँगा, अगल-बग़ल से लोग आएँगे और आपको धर दबोचेंगे। मेरे पास पैसे नहीं हैं। रोज़-रोज़ आपकी बातें सुनकर रोज़-रोज़ मरने से तो अच्छा है, एक ही बार मर जाना। इसलिए मैं आज यहीं आपके सामने फाँसी लगाकर मर रहा हूँ। मैंने राजा को लिखकर भी भेज दिया है कि महाजन का कर्ज़ा न सधा पाने के कारण महाजन मुझे दिन रात गाली देता है, जिसकी वजह से आज मैं अपनी इहलीला समाप्त कर रहा हूँ। मेरी मौत के पूरे ज़िम्मेदार आप हैं, आप! आपका नाम पता भी मैंने उस पत्र में लिख दिया है।

महाजन को काटो तो ख़ून नहीं। डर के मारे उसके चेहरे का रंग ही उड़ गया। वह थर-थर काँपते हुए बोला—"देखिए गोनू झा; ऐसा जुल्म मत कीजिए। मैं अपने रुपए में से एक सौ रुपए छोड़ देता हूँ। अब आप नीचे आ जाइए!"

गोनू झा बोले—"एक सौ रुपए से क्या होगा? मैं नौ रुपए कहाँ से लाऊँगा? नौ सौ देने की ताकत होती तो यह सौ रुपए भी मैं चुका ही देता। इसलिए मुझे तो मरना ही पड़ेगा। "इतना कहकर गोनू झा ने गमछे का फन्दा गरदन में लगा लिया और नीचे कूदने हेतु तैयार हो गए।

यह देख महाजन जल्दी से बोला—"नहीं, नहीं गोनू झा! रुक जाइए। मैं आधा सूद यानी पूरे चार सौ रुपए छोड़ देता हूँ। अब तो आप नीचे आ जाइए।"

"चार सौ घटा दूँ तो भी छह सौ बच जाते हैं। आप मेरी हालत जानते हैं। आप भी क्यों अपना धंधा चौपट करते हैं। मुझे मर जाने दीजिए। देखिए लोगों के बीच आपका नाम कितना फैलेगा कि इस महाजन के पैसे न लौटाने पर लोगों को प्राण तक त्यागने पड़ते हैं। इसलिए लोग भविष्य में आपको हर हालत में पैसे लौटाएँगे। मेरे मरने से आपका कितना उपकार होगा?"

"उपकार तो मेरी अपनी ही जान बचने पर होगा। भविष्य की बात भविष्य में देखी जाएगी गोनू झा! लीजिए। मैं अपना पूरा सूद छोड़ता हूँ!"

"हाय! ये मूल के दो सौ मेरे पास होते तो मैं आपके पास हाथ ही क्यों फैलाता! आपने पूरा सूद छोड़कर मुझ पर बड़ा उपकार किया है। फिर भी, मेरे लिए दो सौ रुपए बहुत भारी हैं। कहाँ से लाऊँगा इन्हें?"

"गोनू झा, यह तो अन्याय है! आप मेरे मूल के पैसे भी नहीं देना चाहते। चलिए कोई बात नहीं कल मेरे बेटे का विवाह है। आज मेरी वजह से आपको कुछ हो गया तो कल उसकी शादी कैसे होगी। ठीक है, मैं आधा मूल भी छोड़ देता हूँ।

गोनू झा नीचे उतर आए। हँसते हुए बोले—"अब तो सिर्फ़ सौ रुपए बच गए हैं?" महाजन बोला—"परन्तु ये सौ रुपए ही आप कब देंगे?"

गोनू झा बोले—"बस कल ही! कल आपके बेटे का विवाह करवाने मैं पहुँच जाऊँगा। 51/-रुपए विवाह करवाने के, 21/-रुपए तिलक चढ़वाने के

21 रुपए ग्रहशान्ति के और 21 रुपए वर-वधू की गाँठ जोड़ने कुल कितने हुए?'

"एक सौ चौदह रुपए!" महाजन बोला।

"उसमें से सौ रुपए काटकर चौदह रुपए कल दे दीजिएगा। अब जाइए घर, लोग आपकी राह देख रहे होंगे।"

महाजन वहाँ से चला गया। गोनू झा ने उसी गमछे से मुँह पोछा और अपनी चिर परिचित मुस्कान के साथ तम्बाकू निकालकर हथेली पर मलने लगे।

गोनू झा का सपना

गोनू झा माँ काली के अनन्य भक्त थे। सुबह-शाम भक्तिपूर्वक उनकी पूजा करते, आरती उतारते, बग़ैर उनकी अर्चना किए और भोग लगाए अन्न-जल ग्रहण न करते।

उनकी पूजा-अर्चना और भक्ति भाव से माँ काली बड़ी प्रसन्न हुई। परन्तु उन्हें इस बात की आशंका थी कि यदि वे अपने असली रूप में गोनू झा के सामने प्रकट होंगी तो सम्भवतः गोनू झा उन्हें न पहचानें क्योंकि इस धरती की रीति ही यही हो गई है कि लोग मन्दिरों और घरों पर तो देवी-देवता को उनके उसी रूप में पूजते हैं, जिस रूप में उनकी कल्पना की गई है। किन्तु उस रूप में प्रकट होने पर मानव जाति उन्हें पहचानने से ही इन्कार कर देते हैं।

इसलिए पहले उन्होंने मोहिनी रूप बनाकर गोनू झा के सामने प्रकट होने की सोची। मोहिनी रूप उन्होंने धारण भी किया तथा जल में अपना प्रतिबिम्ब

वसुधा
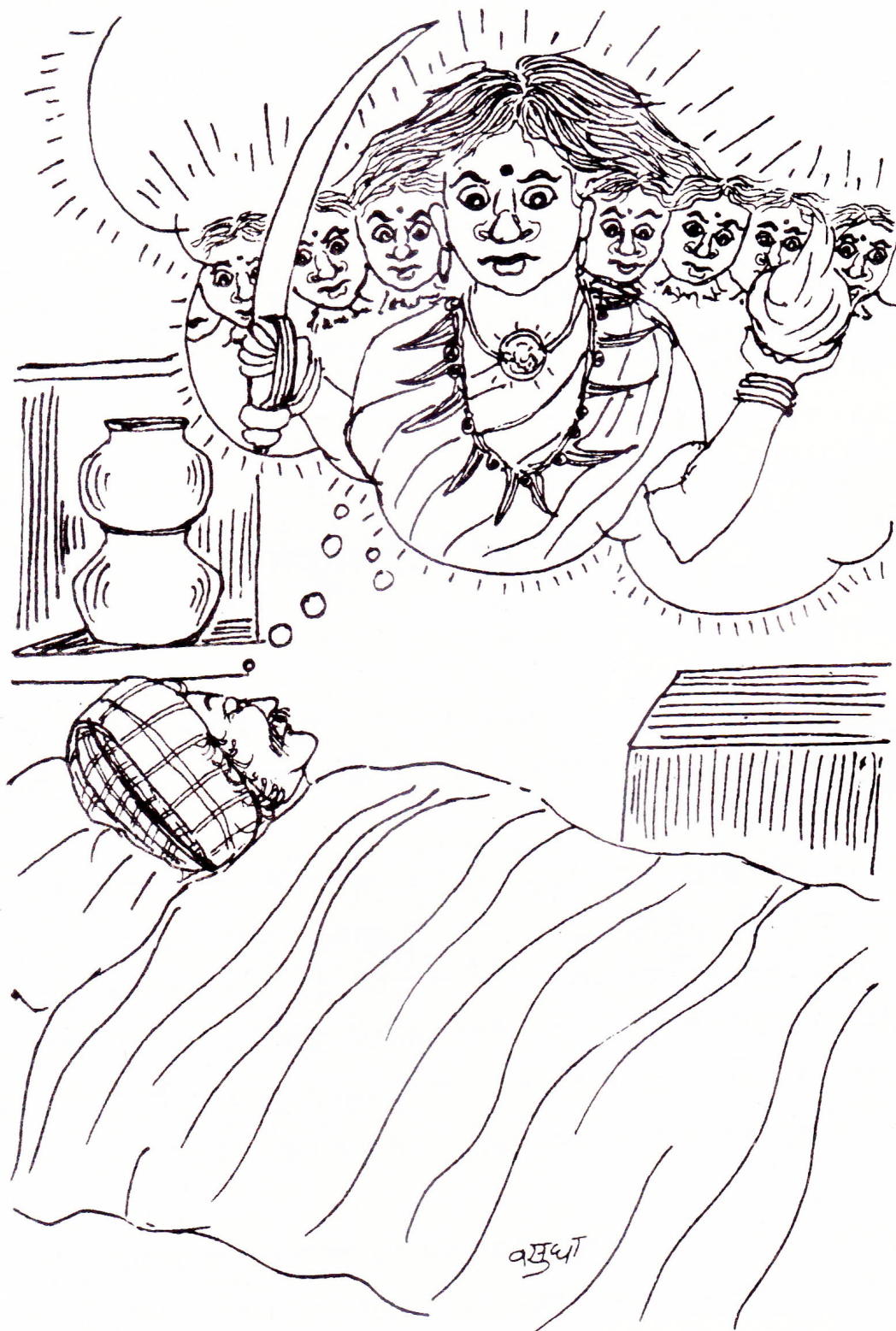
देखा। परन्तु अपने इस रूप पर वे स्वयं ही इतनी मोहित हो गईं कि उन्हें लगा कि यदि गोनू झा उन्हें न पहचानकर उनके इस मोहिनी रूप पर आसक्त हो गए तो क्या होगा? वैसे भी गोनू झा इतने चतुर हैं कि उनके तर्कों के आगे जीतना बड़ा कठिन है। इसलिए बेहतर तो यही है कि उन्हें अपना अत्यन्त भयानक, डरावना रूप दिखाया जाए ताकि वे डर जाएँ। साथ ही इसकी भी परीक्षा हो जाएगी कि वे कितने बुद्धिमान हैं अगर वे उन्हें नहीं पहचान पाते है तो भी वे यह तो देख सकेंगी कि उनके इस भयानकतम रूप को देखकर गोनू झा की क्या प्रतिक्रिया होती है।

यह सोचकर उन्होंने अत्यन्त विकराल रूप बनाया। उस समय जो स्वरूप बनाया था उसमें उनके एक हज़ार चेहरे थे और दो हाथ एक हज़ार फड़कती नाक, दो हज़ार लाल-लाल आग उगलती आँखें। उन्हें विश्वास था कि उनका यह रूप देखकर गोनू झा के होश गुम हो जाएँगे।

गोनू झा गहरी नींद में थे, जब माँ काली अपने एक हज़ार चेहरोंवाले स्वरूप के साथ उनके पास प्रकट हुई। गोनू झा ने उन्हें देखा। वे तुरन्त बिस्तर पर से उतर गए और उन्हें साष्टाँग दंडवत किया। फिर उन्हें देखकर वे हँसने लगे।

अब माँ काली अचम्भे में पड़ गई। कहाँ तो वे यह समझकर आई थीं कि गोनू झा उन्हें पहचान नहीं पाएँगे और उनके इस विकराल रूप को देखकर डर जाएँगे। परन्तु यहाँ तो उल्टा ही हुआ। गोनू झा ने उन्हें साष्टाँग दंडवत किया, इसका अर्थ यह था कि वह उन्हें पहचान गए हैं। परन्तु इस विकराल रूप को देखकर वे डरे नहीं, उल्टा हँसने लगे, यह रहस्य उन्हें समझ में नहीं आया। उन्होंने गोनू झा से पूछा—" तुम मुझे देखकर डरे नहीं?"

गोनू झा ने उत्तर दिया—"बाघ को देखकर सभी डरते हैं, परन्तु उनके बच्चे नहीं। मैं तो आपका ही बालक हूँ। इसलिए आपको देखकर मुझे क्यों भला डर लगने लगे?'

"परन्तु मेरे ऐसे स्वरूप को देखकर मनुष्य तो मनुष्य, असुरों के भी प्राण निकल जाएँ, वैसी स्थिति में भी तुम डरने के बदले हँसने लगे?"

गोनू झा ने उत्तर दिया—"माता! हम लोगों के पास एक ही चेहरा है और एक चेहरे पर भी एक ही नाक है, आँख की तरह दो-दो नहीं, फिर भी जब सर्दी-जुकाम हो जाता है और नाक बहने लगती है तो इन दोनों हाथों से पोंछते-पोंछते तबाह हो जाता हूँ। परन्तु, देख रहा हूँ कि आपके तो एक हज़ार चेहरे हैं, इसलिए एक हज़ार नाक, परन्तु हाथ तो दो ही हैं। सो जब आपको जुकाम होता होगा तो मात्र इन दो हाथों से एक हज़ार नाक कैसे पोंछती होंगी—यह सोचकर ही मुझे हँसी आ गई।

गोनू झा की इस बात को सुनकर माँ काली भी ठठाकर हँस पड़ीं। वे उनकी बुद्धि हाज़िर जवाबी से बहुत ही प्रसन्न हुई उन्होंने कहा—"देख रही हूँ कि तुम बहुत ही चालक हो, मैं तुम्हारी भक्ति-आराधना से तो प्रसन्न थी ही, तुम्हारी बुद्धित्त्व चतुराई ने मुझे प्रभावित भी बहुत किया। मैं तुमसे बहुत ही प्रसन्न हूँ। तुम वर माँगो।"

गोनू झा ने हाथ जोड़कर कहा—"माता! आप सदा मेरे ऊपर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखिए, इससे बड़ा वरदान मेरें लिए और क्या हो सकता है!"

माँ काली बोली—"वह तो रहेगी ही! फिर भी, मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूँ कि बुद्धि, ज्ञान और व्यवहार में कोई भी तुम्हें परास्त नहीं कर सकता। किसी भी समस्या का समाधान तुम्हें तुरन्त ही मिल जाएगा।" यह कहकर वे अंर्तध्यान हो गई।

गोनू झा की नींद खुल गई। वे अपने स्वप्न पर विचार करने लगे। देवी की कृपा और आशीर्वाद के सामने अपना सर झुकाया। कहा जाता है कि जिस तरह से माँ काली के आशीर्वाद से महामूर्ख कालिदास महापंडित बन गए; उसी तरह से देवी के आशीष से गोनू झा के भी गुण और ज्ञान की ख्याति चारों ओर फैलने लगी।

गोनू झा की पढ़ाई

''पूत के पाँव पालने से ही पहचान लिए जाते हैं'' ''—गोनू झा इस लोकोक्ति के सटीक उदाहरण थे। हाज़िर जवाबी, तुरन्त और तीक्ष्ण बुद्धि के लक्षण उनमें बचपन से ही उजागर होने लगे थे। तरह-तरह की बातें बनाकर और बातों से लोगों को करारी मात देने में गोनू झा बचपन से ही आगे और अलग-थलग दिखाई देने लगे थे।

गोनू झा के माता-पिता चाहते थे कि ब्राह्मण-वंश की परम्परा के मुताबिक गोनू झा ख़ूब पढ़ें और पढ़कर पंडित बनें ताकि अपनी पंडिताई के बल पर वे राज दरबार में प्रवेश कर सकें। जो एक बार वहाँ प्रवेश मिल गया तो समझ लीजिए कि पूरी जिन्दगी में काम से छुट्टी। और जो कहीं राजा की कृपा दृष्टि उन पर पड़ी और वे उनके खासमख़ास
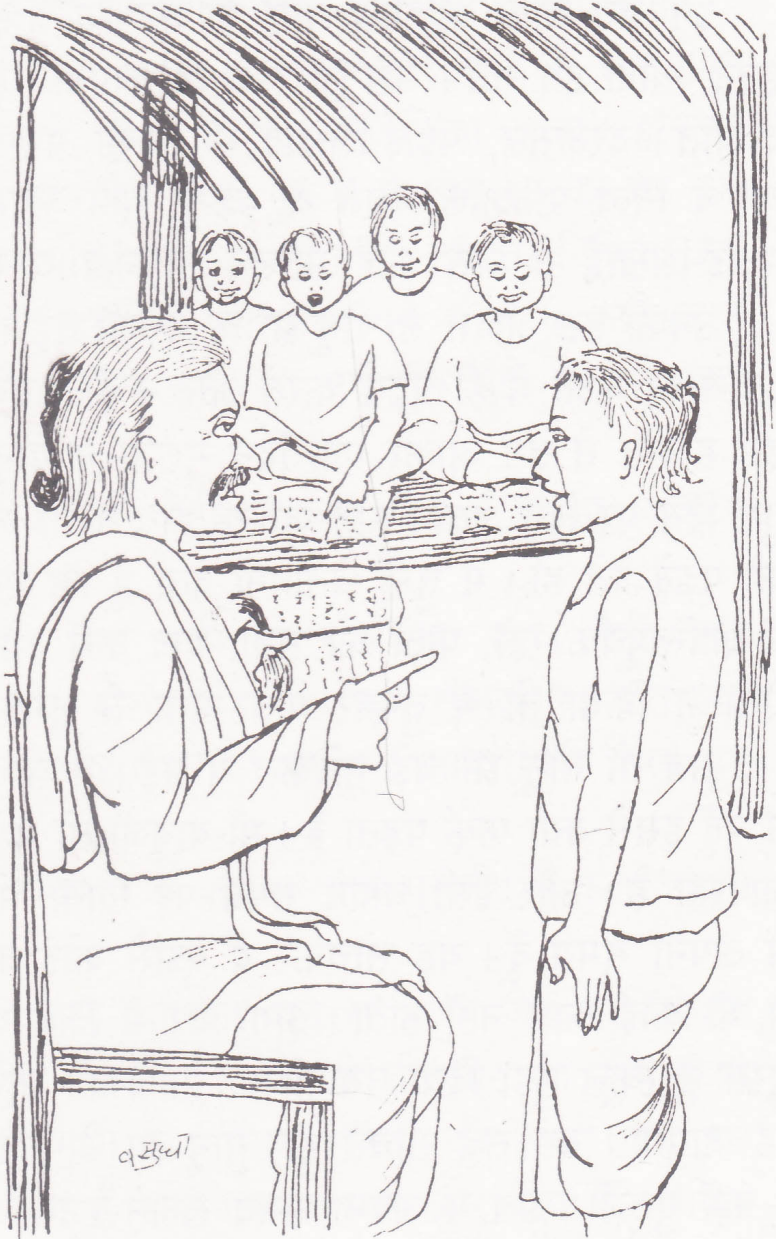
में से एक हो गए, तब तो यूँ समझिए कि पाँचों नहीं, दसो उँगलियाँ घी में।

किन्तु गोनू झा! उनका तो सारा ध्यान बातें बनाने और गप्पे हाँकने में चला जाता। एक से एक गप्प सुनाते कि लोग दाँतों तले उँगलियाँ दबा लेते। बातें तो इतनी गंभीरता से कह जाते कि लोगों को लगता कि अरे, सचमुच ऐसा था क्या?

इन सब बातों के पीछे गोनू झा का ध्यान इतना अधिक रहता और वे इतने ज़्यादा इन सबमें मशगूल रहते कि अपनी पढ़ाई की तरफ़ ध्यान ही नहीं दे पाते। दरअसल, पढ़ाई-लिखाई में उनका मन लगता ही नहीं था। कहने को वे नित्य पाठशाला जाते थे, किन्तु वहाँ केवल जाना भर ही होता था। पढ़ाई-लिखाई से जैसे कोई मतलब ही नहीं था।

उनकी इस आदत से गोनू झा के गुरुजी बड़े परेशान रहते थे क्योंकि गोनू झा न तो कक्षा में ही पढ़ाई करते और न ही सबक याद करके आते। उनकी इस हरकत से तंग आकर एक दिन गुरुजी ने गोनू झा से कहा—"देखो गोनू, तुम दिन पर दिन शैतान होते जा रहे हो। न तो स्वयं पढ़ते हो न किसी दूसरे को पढ़ने देते हो। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि ऐसा करना बन्द करो। कक्षा में शान्तिपूर्वक रहो, पाठों को सुनो, याद करो और मुझे सुनाओ। यदि तुमने ऐसा न किया तो मैं तुम्हारे माता-पिता से तुम्हारी शिकायत कर दूँगा।"

अब तो गोनू झा बड़े मुश्किल में पड़े। वे तो यह समझते थे कि पढ़ूँ या न पढ़ूँ इससे क्या फर्क़ पड़ता है। माँ-बाबूजी तो यही समझते हैं कि बेटा स्कूल जा रहा है। और इसी बहाने समय पर खाना भी मिल जाता है। मैं पढ़ने में अपना समय दूँ। यह सोचकर वे मुझसे कोई काम भी नहीं कराते। स्कूल में भी कोई काम नहीं होता। अगर घर में शिकायत हो गई और बाबूजी ने गुस्से में स्कूल छुड़ा दिया तब तो यह सारी की सारी मौज-मस्ती धरी की धरी रह जाएगी। यह सब सोचते हुए गोनू झा ने विनम्र स्वर में गुरुजी से कहा —नहीं गुरुजी! अब मैं अपना समय खेलने-कूदने या व्यर्थ की गप्पें हाँकने में

नहीं लगाऊँगा। अब मैं मन लगाकर पढ़ूँगा। विश्वास न हो तो आप मुझे पाठ देकर देख लें। मेरे मन में भी यह बहुत बड़ा अरमान है कि आपको पाठ याद करके सुनाऊँ और आपसे शाबाशी बटोरूँ!

गुरुजी फँस गए गोनू झा के चक्कर में पुस्तक में से एक पाठ निकालकर देते हुए कहा—"यह पाठ कल याद करके आना। ध्यान रहे कि यदि बिना पाठ याद किए ही कक्षा में आए तो खाल खींचकर भूसा भरवा दूँगा।

छुट्टी के बाद गोनू झा यथावत अपने खेल-कूद और गप्पों में लग गए। पाठ याद करने की फुर्सत मिलती, तब तो पाठ याद किया आता। इसलिए वे सुबह कक्षा में धीरे-गंभीर बनकर बैठ गए। गुरुजी ने गोनू झा का यह रूप देखकर सोचा कि लगता है कि गोनू झा सुधर गया है। तब तो निश्चित रूप से पाठ याद करके लाया होगा। इसलिए पूरी कक्षा का संचालन करते-करते वे गोनू झा के पास पहुँचे और उनसे कहा—" अब तुम मुझे पाठ सुनाकर अपना शौक़ पूरा कर लो।"

गोनू झा थोड़ी देर चुप रहे। फिर थोड़ी देर बाद बोले—"गुरुजी! कल मैं आपको पाठ अवश्य सुना दूँगा।"

गुरुजी डाँटने लगे—"क्यों? कल कहा तो बोले कि आज नहीं, कल सुनाऊँगा और आज भी वही बात बोल रहे हो कि कल सुनाऊँगा? बात क्या है? तुम अपने-आपको सुधारना चाहते भी हो या बस आवारागर्दी करते हुए दिन गुज़ारना चाहते हो?"

गोनू झा ने फिर से दुहरी विनम्रता से कहा—"नहीं गुरुजी! मैं कल अवश्य सुनाऊँगा।"

इस पर गुरुजी ने कहा—"कान खोलकर सुन लो। तुम जैसे दस छोकरों को मैं अपने अंगोछे में बाँधकर रखता हूँ। बड़े-बड़े तीसमार खाँ मैंने सुधार दिए हैं तो तुम किस खेत की मूली हो? तुमने विनती की है तो एक बार फिर से तुम्हारी विनती मान लेता हूँ और एक अवसर और देता हूँ। लेकिन

अब कल केवल पाठ नहीं, पूरी पुस्तक ही समाप्त करके आना होगा। अगर ऐसा नहीं किया तो मार-मार कर पीठ की खाल उतार लूँगा।''

किन्तु गोनू झा तो गोनू झा ही ठहरे। उन्हें कहाँ समय कि वे किताब देखें और पाठ याद करें। वे अपनी दैनिक चर्या में लगे रहे। पाठशाला जाने का जब समय हुआ तब नहा धोकर तैयार हो गए। भरपेट भोजन किया और चल पड़े पाठशाला की ओर।

कक्षा चल रही थी। गुरुजी पूरी कक्षा से प्रश्न पूछ रहे थे। पूछते-पूछते वे गोनू झा के पास पहुँचे और पूछा—''तो, आज क्या विचार है?''

''कैसा विचार गुरुजी! मैं तो आपका आज्ञाकारी शिष्य हूँ। आपने जैसा कहा था, मैंने ठीक वैसा ही कर दिया है।''

गुरुजी की समझ में कोई विशेष बात नहीं आई। उन्होंने तो यही समझा कि आज मार के डर से गोनू झा पाठ करके आया है। इसलिए वे बोले—''शबाश! तुम्हें गुरु आज्ञा का पालन करना ही चाहिए। चलो, अब सुनाओ पाठ!

गोनू झा झा बोले—''पाठ! कैसा पाठ? आपने तो कहा था कि कल पोथी समाप्त करके ही आना। सो आपके आज्ञानुसार मैंने पोथी समाप्त करके फेंक दी। तो मेरे पास पोथी रही कहाँ जो मैं पाठ याद करता!''

गुरुजी सुनकर अवाक्! सारी कक्षा मुँह दबाकर खी-खी-खी करके हँसने लगी। और गोनू झा वे मन्द-मन्द मुस्कुराते रहे।

□□□